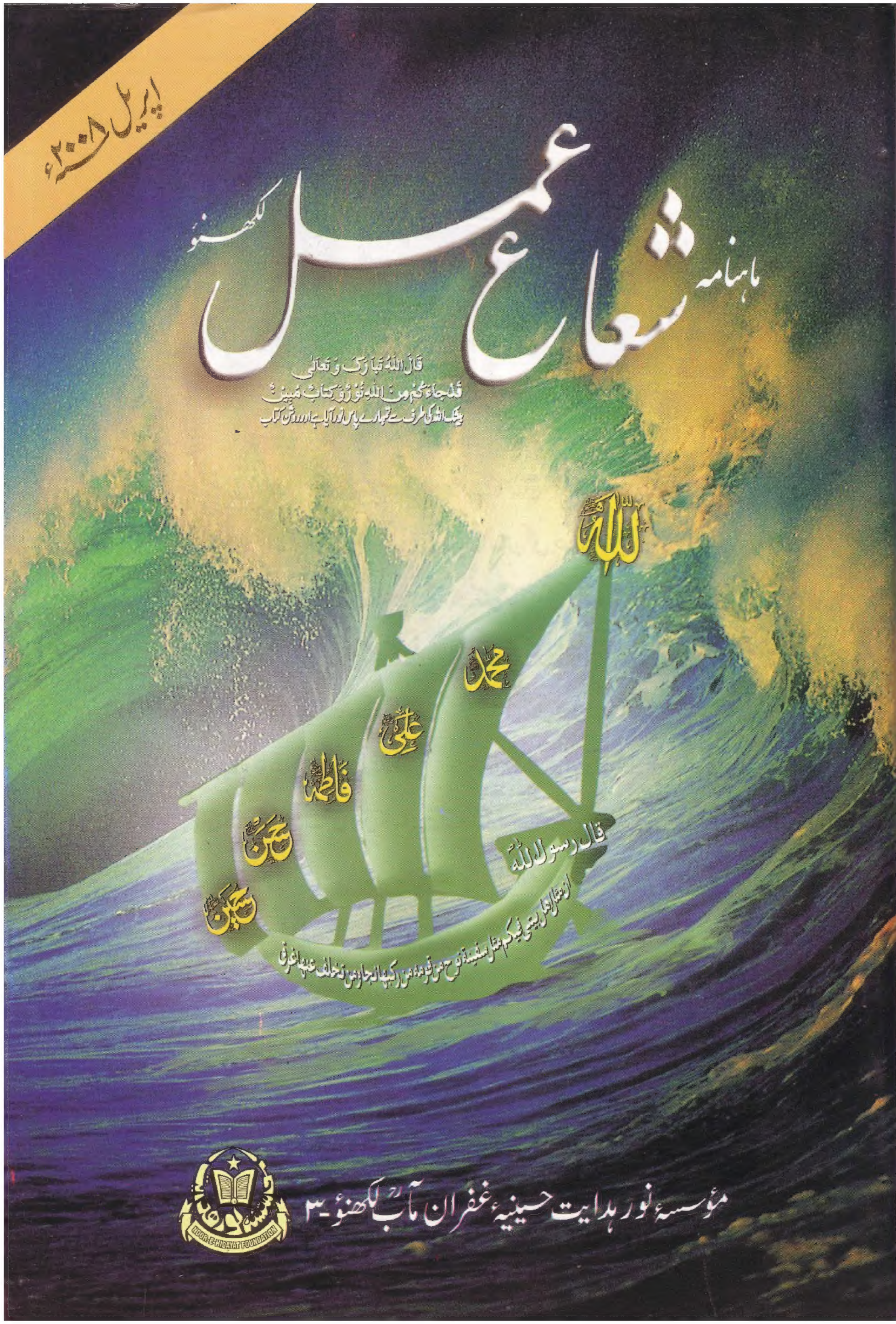
اپریل ۲۰۰۸ء
ماہنامہ
شعاع عمل
لکھنؤ
قال اللہ تبارک و تعالیٰ
قد جاءکم من اللہ نور و کتاب مبین
بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب
اللہ
محمد
علی
فاطمہ
حسن
حسین
قال رسول اللہ
مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳
NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

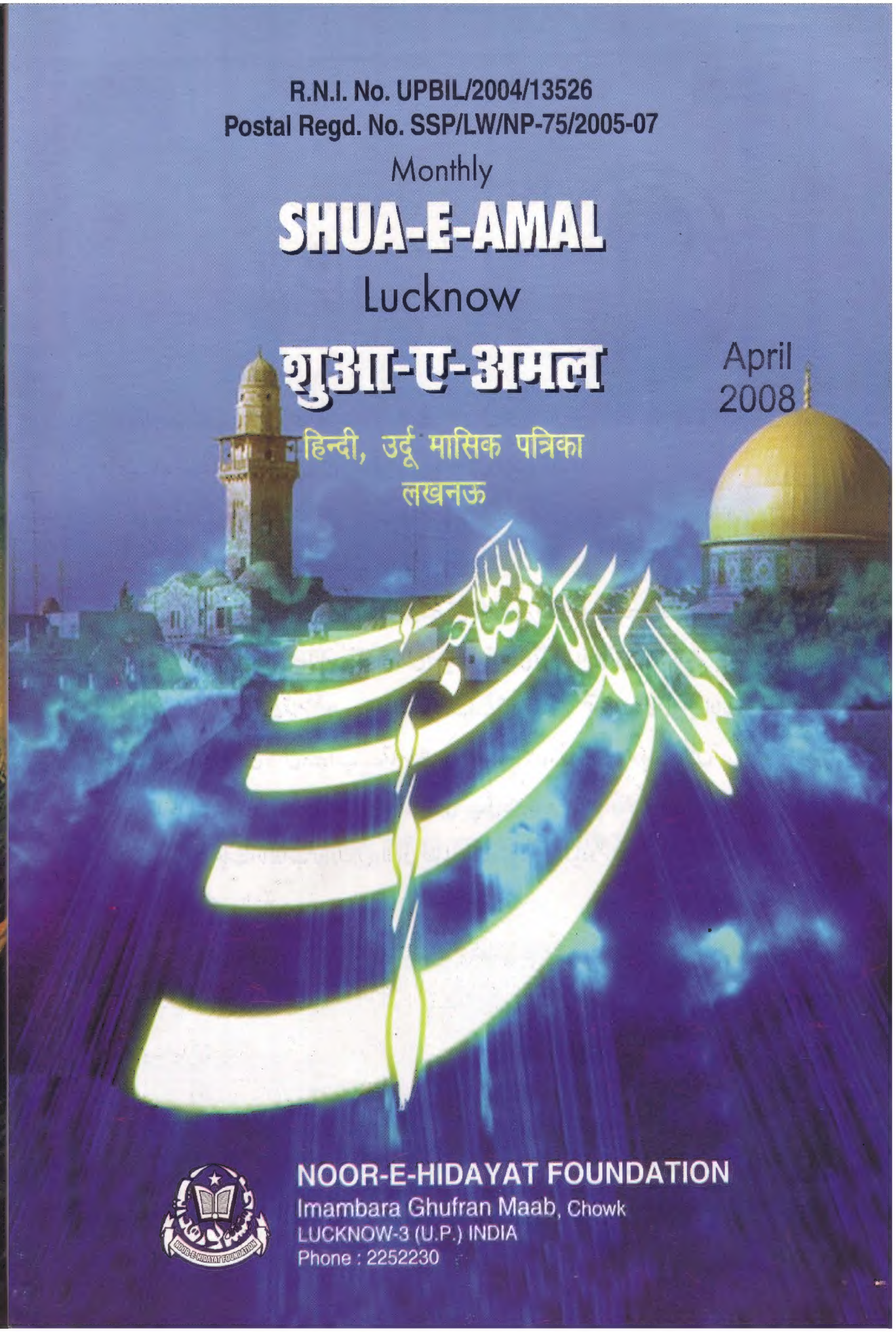
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07
Monthly
SHUA-E-AMAL
Lucknow
शुआ-ए-अमल
April 2008
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ
NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष–4

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक – 10

माह अप्रैल – 2008 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु मिलने का पता क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0 मज़मून लेखक पेज न0

1– अहलेबैत की मुहब्बत और इताअत

सय्यिदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह 3

2– इन्सानियत का अन्जाम

सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद साहब ताबा सराह 4

3– इमाम हसन असकरी (अ0) ग़ैरों की नज़र में

जनाब मुहम्मद सादिक़ ख़ान साहब जौनपुरी 10

4– इमाम हसन असकरी (अ0) और मसाएब

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा 12

5– हम्दे ख़ुदा और नाते रसूल (स0) / मदीह इमाम हसन असकरी (अ0)

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा 14

6– मुख्य समाचार

इदारा 15

अहलेबैत की मुहब्बत और इताअत

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लहिल उज़्मा अल्लामा सै0 अली नक़ी नक़वी

कोई शक नहीं कि अहलेबैते मासूमीन अलैहिमुस्सलाम की मुहब्बत नजात का रास्ता है। मगर मुहब्बत के लिए इताअत एक ज़रूरी फरीज़ा है। बिना इताअत, मुहब्बत के दावे को खुद अहलेबैत ने नाक़ाबिले क़बूल क़रार दिया है।

पहली हदीस:

अली (अ0) बिन मुहम्मद (अ0) ने इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) से कहाः "कुछ लोग आपके दोस्तों में गुनाह करते हैं और कहते हैं कि हमें नजात की उम्मीद है।"

हज़रत ने फरमायाः

"यह लोग झूठे हैं, वह हमारे दोस्त नहीं। यह ऐसे लोग हैं जिन पर अमानी यानी ग़लत ख़याल ने ग़लबा कर लिया है। जो किसी चीज़ की उम्मीद करता है वह उसे हासिल करने के लिए भी काम करता है और जो किसी चीज़ से डरता है वह उससे भागता है।"

याद रखना चाहिए कि यह अमानी का लफ्ज़ वही है जो कुर्आन में यहूदियों और ईसाईयों के बारे में इस्तेमाल किया गया है।

वह कहते हैं कि जन्नत में नहीं दाख़िल होगा मगर वही जो यहूदी और ईसाई हो। यह उनके अमानी, अपने बनाए ख़याल हैं। कहो कि तुम अपने इस दावे का सबूत पेश करो, अगर सच्चे हो।

इसी लफ्ज़ को फिर कुर्आन मजीद ने तमाम मुसलमानों से कहते हुए इस्तेमाल किया हैः

न तुम्हारे अपने बनाए ख़याल से कुछ होता है और न यहूदियों और ईसाईयों के बनाए हुए ख़याल से। जो बुरे काम करेगा उसको उनकी सज़ा मिलेगी और अमानी की लफ्ज़ को इमाम (अ0) ने अपने मुहब्बत करने वालों के बारे लगा दिया है।

दूसरी हदीसः

मुहम्मद बिन मुस्लिस।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) का इरशाद हैः "देखो इधर–उधर नहीं बहको। खुदा की क़सम हमारे शिया सिर्फ़ वही हैं जो अल्लाह की इताअत करें।"

तीसरी हदीसः

जाबिर की रिवायत।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने फरमायाः "खुदा की क़सम हमारे शिया सिर्फ वह हैं जो अल्लाह के फराएज़ का ख़याल रखें और उसकी इताअत करें। ऐ जाबिर! शियों की तो पहचान ही यही है कि उनमें नीचे दी हुई ख़ूबियाँ पाई जाएँः

झुक कर मिलना, नर्मी से काम लेना, अमानतदारी, अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करना, रोज़ा, नमाज़, माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक, पड़ोस में जो ग़रीब, फक़ीर, कर्ज़दार और यतीम रहते हों उनकी ख़बर करते रहना, ज़बान की सच्चाई, कुर्आन की तिलावत और ज़बान को रोकना सब से मगर नेकी के साथ। और यह लोग हमेशा अपनी क़ौम और क़बीले में इतने भरोसे वाले होते थे कि इनके पास अमानतें

बक़िया...............पेज 9 पर

इन्सानियत का अन्जाम

सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद साहब ताबा सराह

आज जिस तरफ भी नज़र उठती है तबाही और बर्बादी के देव इन्सानियत को निगल जाने के लिए मुँह खोले दिखाई देते हैं। बर्बादियों के अंगारे और साँप, दिल की चाहतें, ऐश परस्ती और आराम की चाहत की आग अख़लाक़ और किरदार को जलाकर ख़ाक किये दे रही है। दिल की चाहतें रूहानियत का गला घोंटकर उसको मौत की नींद सुला देने पर लगी हुई हैं।

हर हुकूमत अपने बजट का बड़ा हिस्सा आग उगलने वाले और बर्बाद कर डालने वाले हथियारों पर ख़र्च कर रही है। मुक़ाबले और दौड़ का वह शौक़ जो फितरत का दिया हुआ था जिसका मक़सद था कि इन्सान नेकियों, अच्छे किरदारों, इल्म और अख़लाक़ में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करें जिसका मतलब था ''फस्तबिकुल ख़ैरात'' अच्छाईयों में एक दूसरे से आगे निकल जाओ ताकि कोई एक क़दम उठाए तो दूसरा दो क़दम आगे बढ़ जाए। नतीजे में पूरी इन्सानियत तरक़्क़ी करती चली जाए। अब यह दौड़ ऐटम बम, हाइड्रोजन बम, बीमारियों फैलाने वाले और बर्बाद कर देने वाले हथियारों में हो रही है। ऐसे हलाक करने वाले हथियारों के गोदाम बढ़ते ही चले जा रहे हैं जिनमें एक–एक या सिर्फ कुछ ही ज़मीन को अंगारों में बदल देने के लिए काफी हैं मगर फिर भी मुक़ाबला और दौड़ जारी है।

आज शैतानियत ख़ुश होती नज़र आ रही है, शैतान झूम–झूमकर ''हल मिन मुबारिज़न'' (है कोई मुक़ाबला करने वाला) का नारा लगा रहा है तो फिर क्या इन्सानियत दम तोड़ देगी, शैतानियत ग़ालिब आ जाएगी, आख़री जीत शैतान की ही होगी? लेकिन यह तो अल्लाह का मक़सद और अल्लाह के वादे के ख़िलाफ है।

1– जब शैतान ने दरख़्वास्त पेश की थी कि क़यामत के दिन तक की छूट दे दे। उसी वक़्त यह एलान कर दिया गया था कि क़यामत तक नहीं तुझे एक मालूम वक़्त तक ही छूट दी जा सकती है। जिसके बाद शैतानियत को मिट जाना है क्योंकि इन्सान को फलना–फूलना है।

2– क़ुर्आन ने साफ–साफ एलान किया है कि ''ख़ुदा अपने नूर को पूरा करके ही रहेगा चाहे काफिर कितना ही नापसन्द करें।'' और ''अल्लाह इस के सिवा हर चीज़ से इन्कार करता है उसको इसके सिवा कुछ बर्दाश्त नहीं कि उसका नूर पूरा होकर रहे।''

ख़ुदा का नूर क्या है? दीने हक़, अल्लाह की पहचान, किरदार व अमल की पाकीज़गी, इन्साफ और बराबरी।

शिर्क व कुफ़्र, बिद्अत व गुमराही, ज़ुल्म और चोरी वग़ैरा अगर अंधेरा नहीं तो फिर आयतुलकुर्सी में मोमिनों को किस अंधेरे से निकालने और किस रौशनी में पहुँचाने का वादा किया गया है। क्या जब तक शिर्क और कुफ़्र, ज़ुल्म और बिद्अत, बेईमानी और बेइन्साफी, बद किरदारी और बदअख़लाक़ी का हलका सा साया भी मौजूद है क्या यह कहा जा सकता कि अल्लाह का वह इरादा जिसका ''नूरल्लाहि बिअफवाहिहिम'' और ''यअ्बल्लाहु इल्ला अयं युतिम्मा नूरिही'' के मज़बूत

अलफाज़ में एलान किया गया था पूरा हो गया। और अल्लाह की रौशनी पूरी होने की आख़री मन्ज़िल में पहुँच गई। और अगर नहीं तो मानना पड़ेगा कि एक दिन आएगा जब यह अल्लाह क वादा पूरा होकर रहेगा।

3– अल्लाह का एक वादा है मोमिनों से जिसका कुर्आन में इस तरह बयान हैः ''अल्लाह ने ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों से यह वादा फरमाया है कि वह उनको ज़मीन की ख़िलाफत अता फरमाएगा। उसी तरह जैसे पहले भी दे चुका है। उनको इस दीन पर पूरी–पूरी तरह अमल करने का बदला देगा जो उनके लिये पसन्द किया गया है कि उनके लिए हर तरह के डर और ख़तरे को पूरी तरह अम्न व अमान से बदल देगा बस वह सिर्फ अल्लाह की इबादत करें। इस आयत में कुछ बातें ग़ौर करने लायक़ हैं–

क– ''अल्अर्ज़'' से जब तक ज़हन में या बाहर कोई इशारा न हो पूरी ज़मीन मुराद ली जाएगी। इसलिए पूरी ज़मीन की ख़िलाफत देने का वादा है ज़मीन के किसी एक हिस्से का नहीं।

ख– इसी तरह पूरी ज़मीन में दीन के फैलने का वादा है, दीन का फैलना यानी दीनी के अहकाम का जारी होना शरीअत के क़ानून का लागू होना।

ग– हर तरह का डर दूर करके पूरे अम्न और शांति का क़ायम होना, वह अम्न नहीं जो वक़्ती तौर पर ताक़त के ज़ोर से क़ायम किया जाए। और दबी हुई चिंगारी या ख़राब मवाद की तरह जगह–जगह पर फोड़े की तरह सामने आए।

घ– बस मेरी इबादत करेंगे और ऐसी इबादत जिसमें किसी चीज़ की मिलावट न होगी। शौतान की भी नहीं और चाहत और लालच की भी नहीं।

अगर यह वादा सच्चा है और यक़ीनन सच्चा है। सच्चों के सच्चे का वादा है और अभी तक पूरा नहीं हुआ और यक़ीनन पूरा नहीं हुआ क्योंकि मुसलमानों ने अपनी हुकूमत के आख़री ज़माने में भी जिसके लिए बहरे ज़ुल्मात में घोड़े दौड़ाने पर फख़्र है ज़मीन के फैलाव को देखते हुए एक छोटे से हिस्से पर क़ब्ज़ा किया था।

और क़ब्ज़े का मतलब भी बस टैक्स वसूल करके ख़ज़ानों को भरना और गुलामों और कनीज़ों का राजधानी में बेड़ियों में जकड़े हुए आना, लूटी हुई दौलत को ऐय्याशियों में और कनीज़ों को हैवानी जज़्बात पूरे करने के लिए इस्तेमाल करने के सिवा क्या था। क्या उस ज़माने में भी पूरी ज़मीन पर क़ब्ज़ा था, क्या इस्लामी हुकूमत में शरीअत का क़ानून सही तरह लागू था दूसरी जगहों को छोड़िये क्या राजधानी में भी सच्चे मोमिन के लिए अम्न व अमान था। क्या सरदारों की ऊँची आवाज़ें, शराब से भरे जाम, मज़लूमों की आहें और ज़ालिमों की ठहाके मारती हुई हंसी। शैतान की इबादत थी या अल्लाह की सच्ची इबादत। तो जब अभी तक अल्लाह का वादा पूरा नहीं हुआ अल्लाह और उसके रसूल की सच्चाई पर ईमान भी है तो इस के सिवा कोई रास्ता नहीं कि उस दिन का इन्तिज़ार किया जाए जब ख़ुदा का यह वादा पूरा होने वाला है।

कहा जाता है कि आयत में वादा है कि उसी तरह ख़िलाफत देंगे जैसे पहले वालों को दी थी। तो पहले वालों को कब पूरी ज़मीन की ख़िलाफ़त मिली थी जो मुसलमानों को मिलेगी। लेकिन ख़ास बात यह है कि वादा मुकम्मल हुकूमत का नहीं हुकूमत हासिल करने के तरीक़े के बारे में है। यह नहीं कहा गया है कि इतने ही हिस्से की हुकूमत दूँगा जितनी पहले वालों को दी थी। वादा यह है कि उसी तरह दूँगा जिस तरह

पहले वालों को दी थी। यानी यह हुकूमत दुनिया वालों के वोट की बख़्शी हुई नहीं थी बल्कि यह ख़िलाफत आदम (अ0), नूह (अ0), दाऊद (अ0) की तरह मेरी दी हुई होगी इलेक्शन की नहीं, सेलेक्शन होगा।

4— हम ने ज़बूर में ज़िक्र (ख़ुदा की बातें या तौरेत) के बाद लिख दिया है कि यक़ीनन ज़मीन के वारिस मेरे नेक और अच्छे किरदार वाले बन्दे होंगे। क्या मतलब? ज़मीन के किसी छोटे हिस्से से, किसी छोटी हुकूमत के? तो नेक बन्दों की इसमें क्या ख़ूबी। क्या फिरऔर, नमरूद, चंगेज़ वग़ैरा मालिक नहीं होते रहे। इसलिए जैसा कि लफ्ज़ ''अलअर्ज़'' से मालूम होता है कि पूरी ज़मीन की मीरास है वह एलान जो तौरेत में मौजूद, ज़बूर में जिसका बयान, कुर्आन जिसको नक़्ल कर रहा है वह अब तक पूरा हुआ? और अगर नहीं पूरा हुआ तो कभी न कभी उसको ज़रूर पूरा होना है।

5— कुर्आन मजीद में दो जगहों पर ज़ोर देकर एलान है कि अल्लाह ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ इसी लिए भेजा कि उनका दीन तमाम दूसरे ग़लत दीनों पर ग़ालिब आ जाए चाहे शिर्क करने वाले कितना ही नापसन्द करें, चाहे काफिरों को कितनी ही यह बात नापसन्द हो।

क्या सच्चे दीन ने तमाम झूठे दीनों को मिटा दिया, क्या इस्लाम हर दीन पर ग़ालिब आ गया। अगर नहीं और अल्लाह के रसूल के भेजने का मक़सद यही बयान किया है तो यक़ीनन आख़िर में अल्लाह के मक़सद को पूरा होना है और एक वह वक़्त आना है जब सभी झूठे दीन दुनिया से मिट जाएँ और इस्लाम और सिर्फ इस्लाम का झण्डा लहरा रहा हो।

अच्छा आइये अब आयतों से नज़र हटाते हुए यह देखिये कि फितरत के क़ानून और पैदाइश का अन्दाज़ जिसको कुर्आन ने अल्लाह की सुन्नत कहा है जिसके लिए एलान है ''अल्लाह की सुन्नत में कभी बदलाव नहीं होगा।'' वह सुन्नत जो पूरी काएनात में जारी है और जिससे इन्सान भी अलग नहीं। सूरा आअ्ला की शुरु की आयत ''उस बुज़ुर्ग व बड़ी हस्ती के नाम की तस्बीह पढ़ जिसने पैदा किया और ठीक किया, जिसने तैय किया और मुक़द्दर किया''।

बनाने और पैदा करने, मुक़द्दर करने और हिदायत देने का मतलब है हर चीज़ को उसके हिसाब से ख़ूबियाँ देना, पूरे होने का वक़्त तैय करना और बनावट के हिसाब से उसकी हिदायत करना।

आईये पैदाईश का तरीक़ा देखिये कि वह भाप और गैसों के दल बदल जो अस्ल काएनात हैं, जिनका मतलब कुर्आन ने ''वहिये दुख़ान'' से बयान किया है। जिसमें चाँद, सूरज, सितारे, सैय्यारे तमाम कहकशाएँ ग़रज़ पूरी काएनात सिमटी हुई थी। जब अल्लाह ने पैदा करने का इरादा फरमाया तो भांपों को इस तरह बांटा कि नई–नई कहकशाएँ, नये–नये शम्सी निज़ाम बनते चले जाएँ। जैसा कि कुर्आन में इरशाद हैः सब ज़मीन व आसमान एक–दूसरे में लिपटे हुए और जुड़े हुए थे। हमने उनको अलग किया। हमारा शम्सी निज़ाम भी एक छोटे से सैय्यारे की तरह ज़मीन की शक्ल में फितरत के झूले में झूल रहा है और उसमें ख़ूबसूरत झूले में काएनात का शहज़ादा यानी इन्सान परवरिश पा रहा है। आज तो दुनिया जानती है कि वह माद्दा जो काएनात की बुनियाद है, तरक़्क़ी के रास्ते पर चलने वाला है, माद्दे का कमाल था कि ऐसी ज़मीन बने

जिसके सीने पर दरयाओं और समुन्द्रों की शक्ल में पानी करवटें ले और हवा के इशारे पर चलता हो। ज़मीन और पानी का कमाल था कि यह सांस लेते हुए जानदार की शक्ल इख़्तियार करे। ज़िन्दगी का कमाल था कि उठते हुए इन्सान की मन्ज़िल बने। माद्दा ख़ुदा की चाहत के मातहत सैकड़ों करवटें बदलता हुआ इस क़ाबिल हुआ कि इन्सानी रूह का मरकज़ बना।

इन्सान में भी पैदाईश का तरीक़ा न बदला। वह ज़िन्दगी का कीड़ा जो इतना छोटा था कि बिना टेलिस्कोप के देखा न जा सकता था लेकिन अपने अन्दर ख़ूबियों की दुनिया समेटे हुए था। माँ के पेट के मुनासिब माहोल में तरक़्क़ी करके जनीन बना और जब माँ के पेट की घिरी हुई दुनिया में तरक़्क़ी की जगह न रही तो बच्चे की शक्ल में ज़मीन पर आया। पैदा हुआ बच्चा अच्छी हवा पानी और खाने के सहारे तरक़्क़ी के रास्तों पर चलता हुआ जवानी की शक्ल में मन्ज़िले कमाल को पहुँचा। इससे हटकर पूरी इन्सानियत कमाल की तरफ बढ़ती हुई नज़र आती है। वही इन्सान जो बिना कपड़ों के था और जानवरों की तरह ग़ारों में ज़िन्दगी गुज़ारता था उसकी हिफाज़त के हथियार, उसके नाखुन और दाँत थे आज तरक़्क़ी करता हुआ सितारों से बातें कर रहा है और उसकी हिम्मत की बड़ाई कह रही है

''सितारों से आगे जहाँ और भी हैं''

मगर इन्सान में फरिश्ते या जानवर की तरह एक ही ख़ूबी नहीं है इसमें क़ुदरत ने फरिश्ते और जानवर दोनों की ख़ूबियों को समा दिया है। इसमें एक वह माद्दी पहलू है जिसकी तरफ इशारा करते हुए शैतान ने कहा था कि– ''क्या मैं उसको सजदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है'' और दूसरी वह रूहानी ख़ूबी है जिसके लिए अल्लाह फरमाता है ''मैंने उसमें अपनी रूह फूँकी'' अभी सारी की सारी तरक़्क़िया उसके माद्दी और हैवानी ख़ूबी की है, अभी तक उसका रूहानी अन्दाज़ छुपा हुआ है। क्या इन्सान की रूहानी ताक़त के हिसाब से पैदाईश का तरीक़ा बदल जाएगा, अल्लाह की सुन्नत बदल जाएगी, क्या कुदरत को यह गवारा होगा कि इन्सान अपने माद्दी जज़्बात को पूरा करने के लिए ऐटम बमों और हाइड्रोजन बमों से ज़ीमन को आग के गोले में बदल कर सब कुछ ख़त्म कर दे और इन्सान, इन्सान की हैसियत से अपनी मन्ज़िले कमाल तक न पहुँचे। यह हरगिज़ नहीं हो सकता यह अल्लाह की सुन्नत में बदलाव है जिसके लिए इरशाद हैः– ''अल्लाह की सुन्नत को हरगिज़ बदला नहीं जा सकता और हरगिज़ अल्लाह की सुन्नत को घेरा नहीं जा सकता है'' इन्सान की रूहानियत और उसका इन्सान की हैसियत से पूरा होना उसी वक़्त हो सकता है जब दुनिया में हक़ीक़ी अम्न और ईमान का चलन हो, अक़ीदे और आमाल हर तरह के झूठ की मिलावट से पाक हो कर रिवाज पाएँ।

आइये एक और तरीक़ा भी देखिये। दुनिया के सभी बड़े–बड़े मज़हब और मशहूर दीन, हमारे मुल्क का हिन्दू धर्म, ईरान का पुराना ज़रतश्ती मज़हब, ईसाईयत, यहूदियत ग़रज़ दुनिया के सभी मज़हब इस पर एक हैं कि आख़री कामियाबी इन्सानियत की होगी। शैतानियत की नहीं। शैतान की क़िस्मत में हार है यज़दानियत को फलना–फूलना है। आख़िर में कोई न कोई बड़ा सुधार वाला, इन्साफ और बराबरी का मसीहा बनकर आएगा जो बुराईयों और बदअख़लाक़ियों को बर्बाद करके दुनिया को जो जहन्नम का नमूना थी जन्नत का बाग़ बना देगा। किसी बड़े

सुधारक का ख़याल सभी पुराने मज़हबों में पाया जाना तक़रीबन ज़रूरी बातों में से है।

अब आइये देखें इस आख़री दौर में आने वाले मुस्लेहे आज़म, मुन्तज़िरे आलम के बारे में हदीसें क्या कहती है। तो बजाए इसके कि मैं अपनी तरफ से कुछ लिखूँ वहाबियों के मशहूर व मारूफ आलमी इदारे (जिसको सऊदी अरब की हुकूमत चलाती है) मोअ्तमरे आलमे इस्लामी के शोबे अलजमउल फ़िक़्हुल इस्लामी जिसका काम फ़िक़्ही फतवे जारी करना है। हम इस सिलसिले में केनिया से आए हुए एक सवाल का जवाब कुछ साल पहले (जो 1976 ई0) में दिया है इसको लिख रहे हैं। यह फतवा शैख़ मुहम्मद मुन्तसिर किनानी ने लिखा है और इस शोबे से मुताल्लिक़ 15 और दूसरे आलिमों ने भी इसको सही कहा है।

सलाम के बाद

एक कीनी मुसलमान के जवाब में जिसने महदी–ए–मुन्तज़र, उनके ज़ाहिर होने के ज़माने, वह जगह जहाँ से ज़ाहिर होंगे और इस सिलसिले की दूसरी क़बूल की जाने वाली बातों के बारे में सवाल किया है। (तो जवाब यह है कि) वह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हसनी अलवी फातमी महदी का इन्तेज़ार कर रहे हैं। इनका ख़ुरूज आख़री ज़माने में होगा जो क़यामत की बड़ी निशानियों में से एक निशानी है! वह पच्छिम की तरफ से ज़ाहिर होंगे, मक्का मुकर्रमा, में रुक्न व मक़ामे काबा, काबा और हज्रे अस्वद के बीच कुलज़ुम के पास उनकी बैअत की जाएगी। उनका ज़हूर उस वक़्त होगा जब ज़माने में फितना व फसाद, कुफ्र व ज़ुल्म आम हो चुका होगा। वह ज़माने को इन्साफ और बराबरी से उसी तरह भर देंगे जैसे वह ज़ुल्म और ज़्यादती से भरी हुई थी। पूरी दुनिया पर हुकूमत करेंगे और सारी दुनिया उनकी इताअत में सर झुका देगी। वह सात साल हुकूमत करेंगे। जनाब ईसा (अ0) उनकी शहादत के बाद (आसमान से) उतरेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे (कुछ रिवायतों की बुनियाद पर) या उन्हीं के साथ नाज़िल होंगे और बाबे लुद जो फिलस्तीन में है दज्जाल के क़त्ल में इमाम की मदद फरमाएंगे। (इमाम महदी अ0) उन बारह ख़ुलफाए राशिदीन के आख़री ख़लीफा होंगे जिनकी ख़बर सही हदीसों में दी गई है।

इसके बाद फतवे में रसूल के उन सहाबियों और ताबईनों और एतेबार वाली किताबों का बयान है जिनमें यह ख़बर आई है। उन किताबों का बयान है जो अहलेसुन्नत के आलिमों ने ख़ास तौर पर इमाम ज़माना (अ0) के सिलसिले में लिखी हैं। फिर लिखते हैं: वह आख़री तफ़सीली मज़मून जो इस बारे में हमारी जानकारी और ख़बर में लिखा गया है वह मदीना युनिवर्सिटी के एडिटर का मक़ाला है जो युनिवर्सिटी से निकलने वाले पर्चे की कई इशाअतों में लिखा गया है।

बहस का नतीजा लिखते हैं: ''हाफिज़ों और मुहद्दिसों से नस कर दी है कि महदी (अ0) के बारे में कुछ सही हदीसें और कुछ ऐसी जिनमें ज़्यादातर ख़बरे मुतवातिर है जिनका मुतावातिर होना और सही होना क़तई और यक़ीनी है।

महदी के निकलने का अक़ीदा वाजिब है यह अहलेसुन्नत व जमाअत के अक़ीदों में दाख़िल है। इसका इन्कार करने वाला सुन्नत से अन्जान या अक़ीदे के एतेबार से बिद्अती है।

इस फतवे के बाद अहलेसुन्नत हज़रात के तरीक़ों से रिवायत की जाने वाली हदीसों के बारे में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। बस इतनी बात साफ है कि अहलेसुन्नत की रसूल (स0) से

रिवायत की हुई कुछ हदीसों में यह भी है कि ''उनके बुजुर्ग बाप का नाम मेरे बुजुर्ग बाप के नाम ही जैसा होगा'' और कुछ रिवायतों में है कि ''वह मेरे बेटे हसन की औलाद से होगा'' इसी बुनियाद पर शैख़ मुहम्मद मुन्तसिर लेबनानी ने इमाम का मुबारक नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह और आपको हसनी लिखा है। हालांकि शियों के नज़दीक सभी के यहाँ आपके बाप का नाम इमाम हसन असकरी है और आप हसनी नहीं हुसैनी हैं। इस इख़्तेलाफ की वजह देखने में रिवायत करने वाले का शक है। रसूल (स0) ने फरमाया होगाः ''उसके बाप का नाम मेरे बेटे इमाम हसन (अ0) के नाम की तरह होगा'' रिवायत की किताबत में नून का नुक़ता रह गया और इब्नी के बजाए पढ़ने वाले ने अबी पढ़ा। इसी तरह रसूल (स0) ने फरमाया होगा ''वह उसके बेटे होंगे'' जिसका नाम हसन होगा और रिवायत करने वाला समझा इससे मतलब है कि वह इमाम हसन (अ0) की औलाद में होंगे। और इसकी दलील यह है कि अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम से रिवायत होने वाली मुतवातिर हदीसों में साफ़ है कि आप हुसैनी और इमाम हसन असकरी के बेटे हैं। घर वाले ही घर की बातों को बेहतर समझ सकते हैं। इसलिए अहलेबैत की रिवायतें इसकी वज़ाहत के लिए बहुत अच्छा रास्ता हैं।

□□□

बक़िया .... अहलेबैत की मुहब्बत और इताअत

रखवाई जाती थीं। आख़िर में हज़रत (अ0) ने फरमायाः ''ख़ुदा की क़सम, ऐ जाबिर! कोई शख़्स अल्लाह के दरबार में इताअत के बिना क़रीब नहीं हो सकता और हमारे पास जहन्नम की आग से बचाने का कोई परवाना नहीं है और न अल्लाह के मुक़ाबले में किसी की दलील चल सकती है। जो अल्लाह की इताअत करे वह हमारा दोस्त है और जो अल्लाह की नाफ़रमानी करे वह हमारा दुश्मन है। और हमारी मुहब्बत का फ़ायदा सिर्फ अमल और परहेज़गारी से हासिल हो सकता है।

चौथी हदीसः

उमर बिन ख़ालिद।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने फरमायाः ''ऐ आले रसूल के शियो! तुम्हें तो दुनिया के लिए मिसाल होना चाहिए कि आगे बढ़ने वाले और पीछे रहने वाले सब तुम्हारी तरफ़ पलट कर आएँ।''

फिर फ़रमायाः ''ख़ुदा की क़सम! हमारे पास अल्लाह की तरफ से जहन्नम की आग से बचाने का परवाना नहीं है और न हमारी अल्लाह से कोई रिश्तेदारी है। न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई दलील चल सकती है और न अल्लाह के दरबार में क़रीब होने का इताअत के सिवा कोई रास्ता है। जो तुम में से अल्लाह की इताअत करने वाला हो उसे हमारी मुहब्बत फ़ायदा पहुँचा सकेगी और जो तुम में से अल्लाह की नाफ़रमानी करता रहेगा उसे हमारी मुहब्बत के दावे से कोई फायदा नहीं पहुँच सकता। ख़बरदार धोखा न खाओ। ख़बरदार धोखा न खाओ।''

□□□

इमाम हसन असकरी (अ0) ग़ैरों की नज़र में

जनाब मुहम्मद सादिक़ ख़ान साहब जौनपूरी

रबीउस्सानी महीना 232 हि0 की दसवीं तारीख़ थी जब इमामत के सिलसिले का ग्यारहवाँ वारिस इस दुनिया में तशरीफ लाया। और मदीने की सरज़मीन उसकी इमामत के नूर से रौशन हो गई। पाक नाम हसन और लक़ब ज़की, असकरी और इब्ने रिज़ा मिला। पुकारा जाने वाला नाम अबुमुहम्मद था। बुजुर्ग माँ का नाम हदीसा या सलील था जिनके बारे में इमाम अली नक़ी (अ0) ने फरमाया कि वह कमियों और बुराइयों से बिलकुल पाक है। आपकी पैदाइश के वक़्त इमाम अली नक़ी (अ0) की मुबारक उम्र 16 साल थी। असकरी लक़ब होने की वजह यह बयान की गई है कि आपके महल्ले का नाम असकर था सामरा में आप रहते थे और शायद सामरा इस बुनयाद पर कहा जाता है कि वहाँ उस वक़्त के बादशाह ने छावनी बना रखी थी।

इमाम की पैदाईश के वक़्त बादशाह वासिक़ बिल्लाह था। इसके बाद 247 हि0 तक मुतवक्किल की हुकूमत रही। 247 हि0 में मुस्तंसिर बिन मुतवक्किल हाकिम हुआ। 248 हि0 में मुस्तईन की हुकूमत बनी। 252 हि0 में मुअ्तिज़ बिल्लाह कुर्सी पर बैठा। और उसी ने इमाम अली नक़ी (अ0) को धोखे से ज़हर देकर शहीद किया। फिर 255 हि0 में मुहतदी और 256 हि0 में मुअ्तमद अलल्लाह की हुकूमत बनी और उसी ने इमाम हसन असकरी (अ0) को शहीद कराया।

इसमें शक नहीं कि परवरदिगारे आलम ने जिस दौर में जिसे नुमाइन्दा बनाया सारी काएनात में उसका जवाब नहीं मिला। और फ़ज़ीलतें और ख़ूबियाँ उसकी इस शान से लोगों के सामने आईं कि दुश्मनों को भी इक़रार करना पड़ा। वह मुसीबतों में रहे, क़ैदख़ाने में रहे लेकिन उनके किरदार की किरनें दुनिया के दिलों तक पहुँचती रहीं। यहाँ हर शख़्स उसी शान वाला नज़र आयेगा। जिसे देखो फ़ज़ीलतों का ठाठें मारता हुआ समुन्द्र, जिसे दोखो ख़ूबियों का ख़ज़ाना, दुनिया की कौन सी ख़ूबी है जो यहाँ नहीं है।

दुनिया के हुक्मरानों ने मासूम इमामों (अ0) की ज़िन्दगियों पर बेपनाह पहरे बिठाए और क़ैद व सज़ाओं में रखकर तकलीफ व मुसीबत की इन्तेहा कर दी। लेकिन जिसने एक बार उनके किरदार को समझ लिया, वह दीवाना हुए बिना न रह सका। कितने काफिरों को मुसलमान बना दिया, कितने मुनाफ़िक़ों को ईमान वाला बना दिया। कितने दिमाग़ों को मुहब्बत की रौशनी दी। दरबार में क़त्ल के इरादे से बुलाया गया और जब दरबार में दाख़ला होता है तो वक़्त का हाकिम इज़्ज़त देने के लिए खड़ा हो जाता है। ग़ुलामों को गर्दन मारने के लिये कहा गया है लेकिन जब आप तशरीफ लाते हैं तो ग़ुलाम झुक कर सलाम

करते हैं।

अब्दुल्लाह बिन ख़ाक़ान के बेटे अहमद बिन अब्दुल्लाह के सामने एक बार अलवी सादात की बात हुई तो उसने कहा पूरी ज़मीन पर सादात में इमाम हसन असकरी (अ0) से बेहतर और अफ़ज़ल कोई नहीं है। उनका इल्म, उनका तक़्वा, उनका दुनिया से अलग रहना रश्क करने के क़ाबिल है। लोगों ने कहा यह आप क्या कह रहे हैं। उसने जवाब दिया यह मेरा ज़ाती तजुर्बा है एक दिन मैं अपने बाप के साथ दरबार में खड़ा था कि ख़ादिमों ने ख़बर दी इमाम हसन असकरी (अ0) तशरीफ ला रहे हैं। यह सुनना था कि मेरे बाबा जान उनके इस्तेक़बाल के लिए दौड़ पड़े और बहुत ही इज़्ज़त से लाकर अपने पास बिठाया। मैंने इससे पहले किसी की इस तरह से इज़्ज़त करते हुए नहीं देखा था। मुझे बहुत हैरत हुई कि बाबा को क्या हो गया है वह हज़रत बैठे रहे और मेरे बाबा बातचीत में बराबर यही कहते रहे मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान, इसी बीच में किसी ने ख़बर दी कि ख़लीफा तशरीफ ला रहे हैं। लोग इस्तेक़बाल के लिए दौड़ पड़े। लेकिन बाबा पर कोई असर नहीं हुआ। यहाँ तक कि सवारी मकान के अहाते में आ गई। तो बाबा ने इमाम से कहा कि अब बेहतर यह है कि आप तशरीफ ले जाएं।

मुझे बड़ी हैरत हुई। रात को मैंने बाबा से सवाल किया यह बुज़ुर्ग कौन थे जिनके इस्तेक़बाल के लिए आप बेक़रार थे। अब्दुल्लाह ने कहा यह शियों के इमाम हैं। और बड़ी ख़ूबियों और करामतों वाले हैं। इनके बाप इमाम अली नक़ी (अ0) भी बेपनाह ख़ूबियों के मालिक थे। अहमद कहता है कि मेरे दिल में ख़याल पैदा हुआ कि न जाने मेरे बाबा को क्या हो गया है कि इस तरह से बातचीत करते हैं। और मैंने तैय कर लिया कि अब मैं खुद इन बुज़ुर्ग के हालात को मालूम करूँगा और देखूँगा। बाप के बयान में कहाँ तक सच्चाई है। एक ज़माने तक मैं हालात मालूम करता रहा और हज़रत (अ0) की कमियों को ढूँढता रहा, लेकिन मैंने महसूस किया कि जैसे–जैसे उनके हालात को क़रीब से देखता रहा, उनकी बड़ाई नज़रों में और बढ़ती रही और मालूम हो गया कि यह बुज़ुर्ग उसी शान और इज़्ज़त के हक़दार है।

इस तरह की बेशुमार बातें तारीख़ में मौजूद हैं जहाँ इमाम की बड़ाई को ग़ैरों ने भी क़बूल किया है।

मुहम्मद अय्याश लिखते हैं:–

एक दिन कुछ लोग बैठे हुए इमाम हसन असकरी (अ0) की फ़ज़ीलतें बयान कर रहे थे। महफ़िल में एक अहलेबैत (अ0) का दुश्मन भी मौजूद था उसने कहा आप लोग इतनी फ़ज़ीलतें बयान कर रहे हैं। मैं तो जब जानूँ कि मैं एक सादे काग़ज़ पर ख़ाली क़लम से बिना रोशनाई के मसअला लिख दूँ और वह जवाब दे दें। लोगों ने कहा ज़रूर। उसने मसअला लिख कर लिफाफ़े में बन्द कर दिया और हज़रत के पास भेज दिया। अब जो जवाब आया तो मसअले का हल भी लिखा हुआ था और पूछने वाले का नाम उसके बाप के नाम के साथ लिखा हुआ था। वह शख़्स हैरत में पड़ गया और फ़ौरन मज़हबे हक़ क़बूल कर लिया।

□□□

इमाम हसन असकरी (अ०) और मसाएब

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा

हर ज़माने में अल्लाह के नूर को मिटाने की कोशिश की गई लेकिन परवरदिगारे आलम ने अपने नूर को बाक़ी रखा ताकि लोग इससे फायदा उठा सकें।

यही वजह है कि ज़ालिम का जुल्म व सितम दिन बदिन बढ़ता रहा। मासूम इमाम (अ0) की ज़िन्दगियाँ भी हमेशा वक़्त के हाकिमों की तरफ से मुसीबतों और जुल्मों का निशाना बनी रहीं। और शायद ही कोई ऐसा हाकिम रहा हो जिसने अपनी हुकूमत का मक़सद आले मुहम्मद (अ0) पर जुल्म व सितम को न क़रार दिया हो।

लेकिन इमाम हसन असकरी (अ0) की ज़िन्दगी एक अजीबो ग़रीब मुसीबत का निशाना रही जिसकी मिसाल दूसरे मासूमीन की ज़िन्दगियों में भी नहीं मिलती है। और इसका सबसे बड़ा राज़ यह है कि आलमे इस्लाम ने पैग़म्बर के ज़माने में यह बात सुन रखी थी कि मेरा बारहवाँ वारिस परवरदिगार की हुज्जत होगा जो जुल्म व सितम से भरी हुई दुनिया को बराबरी और इन्साफ़ से भर देगा और दुनिया के हर जुल्म के निज़ाम का तख़्ता पलट देगा। इस बुनयाद पर वक़्त के हाकिम इस बात की तरफ ध्यान देते रहे कि वह ज़माने का महदी (अ0) सबके सामने न आने पाए। इमाम हसन असकरी (अ0) के ज़माने तक यह सुकून था कि महदी (अ0) हुसैन (अ0) की औलाद का नवाँ होगा और अभी हुसैन (अ0) की औलाद के आठ लोग पूरे नहीं हुए हैं लेकिन इमाम असकरी (अ0) का ज़माना आने तक हर जानने वाले को यह अन्दाज़ा हो गया कि अब महदी के आने का ज़माना क़रीब आ गया है और वह उन्हीं की औलाद में होगा। चुनाँनचे आप (अ0) की ख़ास निगरानी शुरु हो गई और आपके घर वालों के साथ वही सुलूक किया गया जो फ़िरऔन ने बनी इस्राईल के साथ किया था।

इस्लाम की तारीख़ गवाह है कि ज़माने के हाकिमों का सुलूक मासूम इमामों (अ0) के बारे में बहुत सख़्त था। मौलाए काएनात (अ0) की शहादत से लेकर कर्बला के वाक़ेए तक आले मुहम्मद (अ0) पर नाज़िल होने वाली कौन सी मुसीबत है जिसमें बनी उमैय्या का हाथ न रहा हो। और जिनके ख़ून से किसी न किसी उमवी हाकिम के हाथ रंगीन न हों। लेकिन इन तमाम जुल्मों के साथ–साथ बनी अब्बास के जुल्मों का नक़्शा इन अलफाज़ में खीचा गया है:

''ख़ुदा की क़सम! बनी उमैय्या के जुल्म बनी अब्बास के जुल्मों के मुक़ाबले में उसका दसवां हिस्सा भी नही हैं।'' कि जिस अब्बासी हाकिम ने हुकूमत की कुर्सी पर क़दम रखा उसका पहला काम यह था कि औलादे रसूल (अ0) को सताया जाए और उनका नाम व निशान तक मिटा दिया जाए, कि जिसका अन्दाज़ा इन हालात से लगाया जा सकता है कि हारून का इमाम मूसा काज़िम (अ0) को बराबर क़ैदख़ाने में रखना और क़ैद व बन्द की हालत में शहीद करा देना, मामून का इमाम रज़ा को वली अहद बनाना फिर शहीद करा देना। इमाम मुहम्मद तक़ी को दामाद बनाना और फिर सितम का निशाना बनाकर मुअ्तसिम का आपको ज़हर दिला देना, मुतवक्किल

का इमाम हुसैन (अ0) की क़ब्र की बर्बादी का सामान करना और इस तरह के बेशुमार जुल्म हैं जो मासूम इमामों (अ0) के सामने आते रहे हैं और बनी अब्बास के नमकहराम हाकिम जिसके नाम पर हुकूमत में आए थे उसी घराने को बेनाम व निशान बनाने पर तुले रहे हैं।

इमाम हसन असकरी को इन मुसीबतों में से एक नया हिस्सा मिला था कि ज़ालिमों को मालूम था कि पैग़म्बरे इस्लाम का बारहवाँ वारिस जुल्म की बिसात को उलट देगा और उसके आने के बाद जुल्म व सितम का ख़ात्मा हो जाएगा और यह भी मालूम था कि उनकी नस्ल के ग्यारहवें वारिस हैं इसलिए जुल्मों का पूरा रुख़ आपकी मुबारक ज़ात की तरफ था और हर एक आपकी ज़िन्दगी को ख़त्म करने पर तुला हुआ था।

चुनानचे ज़ालिमों ने क़त्ल करने के बजाए तकलीफं देने का रास्ता चुना मगर कुदरत की नज़र में ख़ुदा के वलियों के सब्र के जौहर खुलने का यह बेहतरीन रास्ता है। जुल्म अपनी हद से गुज़र गये। क़ैद व बन्द, ख़ाना नशीनी, नज़रबन्दी और इस तरह के सख़्त हालात का सामना करना पड़ा कि जिस महल में ज़ालिम आराम करें उसके एक हिस्से में इमाम को क़ैदी बनाकर रखा गया कि यह आले रसलू (अ0) के साथ उम्मत की नज़र में बेहतरीन सुलूक था।

आपके क़ैदख़ाने के ज़माने का एक वाक़ेआ यह मिलता है कि जब आप (इमाम हसन असकरी अ0) क़ैद कर लिये गये तो बनी अब्बास और उसके साथ के लोगों में से सालेह बिन अली वग़ैरा सालेह बिन वसीफ़ के पास पहुँचे और उससे कहा किः हज़रत अबुमुहम्मद अलैहिस्सलाम के साथ ज़रा भी नर्मी न करना, बल्कि और सख़्ती बढ़ा दो।

सालेह बिन वसीफ ने कहा, जहाँ तक हो सका मैंने दो शरीर व ज़ालिम लोग उन पर लगाए मगर वह दोनो ही आपकी नमाज़ और इबादत को देखकर मुतास्सिर हो गये।

इसके बाद उसने उन दोनों मुहाफिज़ों को बुलवाया। उनसे पूछा, बताओ तुम दोनों की उस मर्द (इमाम हसन असकरी अ0) के बारे में क्या राय है?

उन्होंने कहा, हम ऐसे शख़्स के बारे में क्या कहें जो दिन भर रोज़े से रहते हैं और रात भर इबादत के सिवा न किसी से कोई बात करते हैं और न किसी और काम में लगते हैं। वह अगर कभी नज़र उठाकर हम लोगों की तरफ देखते हैं तो हमारा रोयाँ–रोयाँ काँपने लगता है और दिल इस तरह घबराने लगता है कि अपने क़ाबू से बाहर हो जाता है।

अब्बासियों ने जब यह सुना तो वहाँ से मायूस वापस हो गये। ख़लीफा की परेशानी बढ़ गई और वह आपको मिटाने की फ़िक्र में लग गया। यहाँ तक मुअ्तमद ने आपको ज़हर दिलवा दिया। और इस तरह 8 रबीउल अव्वल 260 हि0 में इमामत का ग्यारहवां चाँद गहन में आ गया और हमेशा के लिए अपने बेटे क़ाएमे आले मुहम्मद से रुख़सत हो गये।

रिवायत के हिसाब से आपके जनाज़े की नमाज़ आपके भाई जाफ़र बिन इमाम अली नक़ी (अ0) ने जब पढ़ाने के लिए तकबीर का इरादा किया वेसे ही एक कमसिन लड़के सामने आए और फरमायाः चचाजान मैं अपने बुजुर्ग बाप की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने का हक़दार हूँ। यहाँ तक कि आपने खड़े होकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और आप (अ0) के बुजुर्ग बाप के पास ही आपको दफ़्न कर दिया गया।

□□□

हम्दे ख़ुदा और नाते रसूल (स०)

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा

हम्दे ख़ुदा किया करो इसमें बड़ा सवाब है। नाते नबी (स०) पढ़ा करो इसमें बड़ा सवाब है।।
उलफते आले फातिमा (स०) अज्रे रसूले (स०) पाक है। अज्रे नबी (स०) अदा करो इसमें बड़ा सवाब है।।
सबसे बड़े रसूल (स०) हैं सबसे बड़े इमाम (अ०) हैं। उनकी बहुत सना करो इसमें बड़ा सवाब है।।
अपने ही वास्ते दुआ करने में क्या भलाई है। सबके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है।।
सच्चे बनो यही तो है उलफते सादिक़े (अ०) नबी (स०)। झूठ से बस बचा करो इसमें बड़ा सवाब है।।
झूठों से मुँह को मोड़ लो सच्चों के साथ चल पड़ो। सच है किधर पता करो इसमें बड़ा सवाब है।।
मुल्ला है हक़ बयानी से आज नदा जो मुन्हरिफ। इसके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है।।

मदीह इमाम हसन असकरी (अ०)

रसाई दीदओ दिल की इमामे असकरी (अ०) तक है। हमारा राब्ता बस रौशनी से रौशनी तक है।।
विलाए असकरी (अ०) पर मरने वाले जी रहते हैं। इसी मर जाने पर कुर्बान खुद से ज़िन्दगी तक।।
रहे नेअ्मात ही मज़हब मेरा है सच में कहती हूँ। तगो दू अपनी ऐ मौला(अ०)! तुम्हारी ही गली तक है।।
तवातुर से वही हीरों की बोसा गाह बनती है। रसाई जिस जबीं की उस गली की कंकरी तक है।।
वही अल्लाह वाला है वही अहमद को प्यारा है। कि जिसका सिलसिला यारो! दरे आले नबी तक है।।
वही अफराद मालूमात की दुनिया में जीते हैं। कि जिनकी आमदो शुद इल्म की बारहदरी तक है।।
मुहिब्बे असकरी (अ०) दावे से कहती हूँ बेहेश्ती हैं। वही दावा जो पहले था वही दावा अभी तक है।।
अता ख़ालिक़ ने की है ताक़ते "कुन" मेरे मौला को।। अदू की रफ़्तओ परवाज़ बस जादूगरी तक है।।
दुआ होते ही लो बग़दाद जल–थल होता जाता है। निज़ामे अब्तरी सारे का सारा अब तरी तक है।।
जो कल बेकल थे अब शदाब हैं बाराने रहमत से। पहुँच अस्वाते ज़िन्दाबाद की दरया दिली तक है।।
नदाए आले (अ०) अहमद (स०) को निदाए आसमानी है। असर मिद्हत का तेरी सुन! दिल इब्ने अली (अ०) तक है।।

इदारा

मुख्य समाचार

ईरानी पार्लियामेण्ट में राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद के हामियों की बढ़त

ईरान के पार्लियामेण्ट के चुनाव में राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद के हामियों को बढ़त मिली है। पार्लियामेण्ट की 290 सीटों के लिए जुमे को वाटिंग हुई। ख़बरों के अनुसान राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद के हामियों ने 32 में से 19 सीटें हासिल की हैं। सरकारी रास्तों ने गृहमंत्रालय के हवाले से बताया कि पोलिंग के दौरान टर्नआउट 55 से 65 प्रतिशत रहा। ईरान में आम चुनाव के लिए वाटिंग ख़त्म हो गई है। वोटिंग के वक़्त में पाँच घण्टे के लिए यह कहते हुए बढ़ोत्तरी कर दी गई कि पोलिंग स्टेशनों पर वोट डालने वालों की भीड़ ज़्यादा है। एलेक्शन कमीशन के बड़े अधिकारी अली रज़ा अफशान ने कहा कि वोटरों का टर्न आउट बहुत बढ़ा हुआ और पिछले चुनाव के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा है। मुबस्सिरीन का ख़याल था कि टर्न आउट 50 प्रतिशत से ज़्यादा न होगा बल्कि राजधानी तेहरान में तो शायद इससे भी कम हो। बीबीसी के हिसाब से हो सकता है कि बहुत से ईरानी वोट डालने के लिए इसलिए नहीं गए होंगे कि उनकी अपनी पसन्द के उम्मीदवार चुनाव में शामिल ही नहीं हैं। बीबीसी का कहना है इन चुनाव में राष्ट्रपति अहमदी नेजाद के मुख़ालिफों को चुनाव में हिस्सा लेने पर पाबन्दी लगा दी गई थी। बीबीसी का कहना है कि इस्लाह पसन्दों को ना अहल क़रार दिये जाने के बाद अब सिर्फ यह देखना बाक़ी है कि चुनाव में हिस्सा लेने वाले क़दामत पसन्दों के बीच सीटों की बाँट किस तरह होगी। ईरानी हुक्काम ने अवाम से अपील की थी कि वह बड़ी तादाद में वोट डालने के लिए आएं ताकि उनके कहे के मुताबिक़ अमरीका और ईरान मुख़ालिफ मुल्कों को जवाब दिया जा सके। इन चुनाव से यह नज़र आ जाएगा कि 2009 ई0 में होने वाले राष्ट्रपति के चुनाव की शक्ल क्या होगी। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद जो सींगाल में इस्लामी कान्फ्रेंस में शामिल थे वोट डालने के लिए मुल्क वापस आए। उन्होंने कहा कि दुनिया ने ईरान को अपना 'रोल माडल' और मसीहा चुना है। इस्लाह पसन्दों को उस वक़्त अपने आपको इन चुनाव से अलग करना पड़ा जब उन्हें इस बात पर ना अहल क़रार दिया गया कि वह खुले तौर पर इस्लामी इक़दार के वफादार नहीं हैं। ईरान की मजलिसे शूरा, जो मज़हबी रहनुमाओं और जजों की एक ग़ैर चुनावी काउंसिल है उसने 1700 उम्मीदवारों को चुनाव में हिस्सा लेने से रोक दिया था। तजज़ियाकारों के मुताबिक़ चुनाव के अस्ल जीतने वाले पिछले शिद्दत पसन्द पासदाराने इन्क़ेलाब के अरकान हो सकते हैं जो असेम्बली में अब तक सबसे बड़ी ताक़त यानी मज़हबी रहनुमाओं की जगह ले सकते हैं। इन चुनाव से यह भी उम्मीद की जा रही है कि अगर शिद्दतपसन्द नौजवानों की एक नई नस्ल को हुकूमत मिल गयी तो रूहानी पेशवा आयतुल्लाह सैय्यद अली ख़ामेना–ई की ताक़त में और बढ़ोत्तरी होगी।

बाकमाल अदीब और मुहक़्क़िक़ मु0 र0 आबिद को सख़्त सदमा

अफसोस कि 8 रबीउल औव्वल 1429 हि0 मुताबिक़ 17 फरवरी 2008 ई0 को बाकमाल अदीब और मुहक़्क़िक़ आली जनाब रिज़ा आबिद साहब के वालिद जनाब सिब्तुररज़ा रिज़वी साहब ने रिहलत फरमाई। मरहूम अपने ख़ानदान के सभी लोगों से बहुत मुहब्बत करते थे आपकी तदफीन दूसरे दिन यानी 9 रबीउल अव्वल 1429 हि0 को कर्बलाए मल्का जहाँ, ऐशबाग़ लखनऊ में हुई। इदारा मरहूम के घर वालों को ताज़ियत पेश करता है और अल्लाह से दुआ करता है कि मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) के तुफ़ैल में मरहूम के दरजात को बुलन्द फरमाए और उनके घर वालों को सब्र अता फरमाए। मोमिनों से इल्तेमास है कि सूरा–ए–फातेहा की तिलावत फरमाकर मरहूम की रूह को सवाब पहुँचाएं।

मदीने में शिया ज़ाएरीन गिरफ्तार कर लिये गये

ख़बरों के अनुसार अल्लाह के रसूल (स0) की वफात कि सिलसिले में आप आप (स0) की ज़ियारत के लिए मदीन–ए–मुनव्वरा जाने वाले कई ज़ियारत करने वालों को गिरफ्तार कर लिया गया। सऊदी अरब के अम्रबिलमारूफ व नही अनिलमुन्कर बोर्ड ने बिलकुल बेबुनियाद इल्ज़ामों की बुनियाद पर मदीन–ए–मुनव्वरा में आने वाले शिया ज़ाएरीन को गिरफ्तार किया है। यह लोग आप (स0) की वफात के दिनों की मुनासिबत से अल्लाह के रसूल (स0) की ज़ियारत के लिए आए थे।

मदीने से लौटकर आने वाले एक शिया ज़ाएर ने बताया कि इस बोर्ड के मिम्बर अलग–अलग बहानों से शिया ज़ियारत करने वालों को तकलीफ पहुँचाते हैं। इस ऐनी गवाह ने बताया कि हम नबी (स0) की मस्जिद में थे कि इसी बीच अम्रबिलमारूफ व नही अनिलमुन्कर बोर्ड के अरकान दाख़िल हुए और उन्होंने एक आलिमे दीन समेत तीन शिया ज़ाएरीन को गिरफ्तार किया। इन तीनों ज़ाएरीन में से एक ईरानी ज़ाएर का जुर्म यह था कि उसके हाथ में दुआ और ज़ियारात की किताबें थीं।

गिरफ्तार होने वाले एक ज़ाएर ने इण्टरव्यु देते हुए कहाः इसमें शक नहीं है कि मज़कूरा बोर्ड के इक़दामात तैय किये हुए मन्सूबे के तहत अमल में आते हैं और इन इक़दामात का मक़सद शिया ज़ाएरों को तंग करना और उनको तकलीफ और परेशानी की वजहें फराहम करना है। उस ज़ाएर ने कहाः वह न सिर्फ बक़ीअ् में ज़ियारात पढ़ने की इजाज़त नहीं देते बल्कि बक़ीअ के क़रीब जाने और लोहे की जालियों से बक़ीअ के अन्दर झांकने तक की इजाज़त नहीं देते।

दो बजुर्ग शख़्सियतों की रिह्लत, मिल्लत का इल्मी नुक़्सान

(1) 11 फरवरी 2008 ई0 को आले नज्मुल उलमा में बुजुर्ग आलिमे दीन मौलाना सैय्यद मुहम्मद मोहसिन साहब की लम्बी बीमारी के बाद रिहलत हो गई, आपकी पूरी उम्र दीन की ख़िदमत में गुज़री आपने कुर्आन मजीद का मन्ज़ूम तर्जुमा भी फरमाया है। आपने बहुत दिनों तक शिया डिग्री कालेज लखनऊ में दीनियात के शोबे के सदर की हैसियत से ख़िदमत की। 12 फरवरी को इमामबाड़ा गुफ़रानमॉब में मरहूम की तदफीन हुई।

(2) शायरे अहलेबैत जनाब सैय्यद मुहम्मद इबाद क़ैस ज़ंगीपुरी साहब ताबा सराह के बेटे मौलाना सैय्यद मुहम्मद यूशअ् फ़ैज़ी ज़ंगीपुरी ने 10 मुहर्रम 1429 हि0 को बंगलौर में इन्तेक़ाल किया। आप 23 साल तक मस्जिदे असकरी बंगलौर में इमामे जुमा व जमाअत रहे। आपकी तदफीन आपके वतन ज़ंगीपुर में हुई।

इदारा मरहूमीन के ख़ानदान वालों को ताज़ियत पेश करता है और दुआ करता है कि अल्लाह तआला मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) के तुफ़ैल में मरहूमीन को जवारे मासूमीन में जगह इनायत फ़रमाए।

अमल के बिना सिर्फ अच्छा अक़ीदा काफ़ी नहीं: मौलाना सै0 कल्बे जवाद

8 मार्च से 13 मार्च 2008 ई0 तक सईदुल मिल्लत हाल, शिया कालेज लखनऊ में पाँच मजलिसें हुईं। इन मजलिसों को क़ाएदे मिल्लत हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लिमीन मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने ''अक़ीदा और अमल'' के उनवान से ख़िताब फरमाया। क़ाएदे मिल्लत ने अपने बयानों में कहा कि सिर्फ यह कह देना कि ''साहेब अक़ीदा अच्छा होना चाहिए बस'' यह काफी नहीं है जब तक वह अच्छा अक़ीदा अमल के ज़रिये सामने न आए।

मौलाना ने कहा कि अक़ीदे को हमारे उलमा ने इसी लिए उसूले दीन और आमाल को फ़ुरूए दीन का नाम दिया है क्योंकि उसूल जड़ों को कहते हैं और जड़ें दिखाई नहीं देतीं और फ़ुरूउ शाख़ों को कहते हैं जो दिखाई देती हैं इसलिए आमाल अक़ीदे को दिखाने का ज़रिया हैं। इन पाँच मजलिसों में अहलेबैत के चाहने वालों ने बड़ी भीड़ के साथ शिरकत की और क़ाएदे मिल्लत के बयानों से फ़ायदा उठाया।